यीशु ने “तुम कहते हो” इस वाक्यांश का उपयोग क्यों किया?
(मत्ती 27:11)

प्रश्न: जब यीशु से प्रश्न पूछे जाते थे, तो वे सीधे उत्तर क्यों नहीं देते थे, बल्कि “तुम कहते हो” कहते थे? (मत्ती 27:11)

उत्तर:

सुसमाचार में हम देखते हैं कि जब यीशु से धार्मिक नेताओं और राजनीतिक अधिकारियों ने प्रश्न किए, तो उनका उत्तर अक्सर सीधे नहीं था। इसके बजाय, उन्होंने अक्सर “तुम कहते हो” का उपयोग किया। यह उत्तर पहले तो असामान्य लग सकता है, लेकिन इसमें गहरी आध्यात्मिक और सैद्धांतिक महत्वता है। आइए कुछ प्रमुख शास्त्रों के माध्यम से इसे समझते हैं।

मत्ती 27:11

[11] “यीशु फिर गवर्नर के सामने खड़ा हुआ; गवर्नर ने उससे
पूछा, ‘क्या तुम यहूदियों के राजा हो?’
यीशु ने उससे उत्तर दिया, ‘तुम कहते हो।’”

इस क्षण में, यीशु आरोप को अस्वीकार नहीं करते, बल्कि उत्तर इस

यीशु ने “तुम कहते हो” इस वाक्यांश का उपयोग क्यों किया?
(मत्ती 27:11)

तरह देते हैं कि निर्णय पूछने वाले पर छोड़ दिया जाए। वह “यहूदियों के राजा” के शीर्षक की सीधे पुष्टि या इनकार नहीं करते। इसके बजाय, वे प्रश्नकर्ता को अपने शब्दों के महत्व पर विचार करने के लिए चुनौती देते हैं।

लूका 22:68-71

[68] “यदि मैं तुम्हें बताऊँ, तो तुम मुझ पर विश्वास नहीं करोगे।
[69] और यदि मैं तुमसे भी पूछूँ, तो तुम मुझे उत्तर नहीं दोगे
या मुझे जाने नहीं दोगे।
[70] अब से मनुष्य का पुत्र परमेश्वर की शक्ति के दाहिने हाथ
पर बैठेगा।”
[71] “तब उन्होंने कहा, ‘क्या तुम परमेश्वर के पुत्र हो?’
यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, ‘तुम कहते हो कि मैं हूँ।’”

इस वार्ता में, यीशु समान दृष्टिकोण अपनाते हैं: वे उनके शब्दों की सत्यता को स्वीकार करते हैं, लेकिन एक गहरी सच्चाई की ओर इशारा करते हैं – उनके परमेश्वर पुत्र होने की अधिकारिता। यहाँ “तुम कहते हो” कोई अस्वीकार नहीं है, बल्कि एक निमंत्रण है कि वे

यीशु ने “तुम कहते हो” इस वाक्यांश का उपयोग क्यों किया?
(मत्ती 27:11)

स्वयं यह सत्य समझें।

लूका 23:3

“तब पिलातुस ने उससे पूछा, ‘क्या तुम यहूदियों के राजा हो?’
यीशु ने उत्तर दिया, ‘तुम कहते हो।’”

यहाँ भी, यीशु शीर्षक की पुष्टि करते हैं, लेकिन पिलातुस की अपेक्षा के अनुसार नहीं। वह केवल राजनीतिक रूप से “यहूदियों के राजा” नहीं हैं, बल्कि उनके राज्य का स्वरूप सार्वकालिक और आध्यात्मिक है। उनका राज्य इस दुनिया का नहीं है (यूहन्ना 18:36)।

“तुम कहते हो” का धार्मिक महत्व

यीशु अक्सर इस वाक्यांश का उपयोग आत्म-प्रतिबिंब और आत्म-परीक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए करते थे। धार्मिक दृष्टि से इसका कई उद्देश्य है:

यीशु ने “तुम कहते हो” इस वाक्यांश का उपयोग क्यों किया?
(मत्ती 27:11)

सत्य की पुष्टि, परन्तु सतर्कता के साथ:
यीशु सीधे दूसरों के शब्दों को नकारते नहीं हैं; वह उन्हें इस तरह स्वीकार करते हैं कि प्रश्नकर्ता अपनी समझ पर विचार करे। उनका उद्देश्य केवल वाद-विवाद नहीं था, बल्कि आध्यात्मिक सत्य की समझ को प्रेरित करना था।

रक्षा-रहित दृष्टिकोण:
मत्ती 27:11 में, जब पिलातुस ने उनसे पूछा कि क्या वह यहूदियों के राजा हैं, तो यीशु ने बिना बचाव के उत्तर दिया। वे स्वयं को साबित करने की आवश्यकता नहीं महसूस करते। उनके उत्तर और मौन से हमें सिखने को मिलता है कि हमारी पहचान ईश्वर की सत्यता में आधारित होनी चाहिए, दुनिया के लेबल या आरोपों में नहीं (यूहन्ना 8:32)।

विरोध का बुद्धिमत्ता से सामना:
यीशु जानते थे कि उनके प्रश्नकर्ता सत्य नहीं ढूंढ रहे थे, बल्कि उन्हें फँसाने की कोशिश कर रहे थे (मत्ती 22:15-22)। जैसे फरीसियों ने कर देने के विषय में पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया:

“केसर को केसर का दो, और परमेश्वर को परमेश्वर का।” (मत्ती 22:21)

यीशु ने “तुम कहते हो” इस वाक्यांश का उपयोग क्यों किया?
(मत्ती 27:11)

इसी तरह “तुम कहते हो” कहकर, वे झूठे आरोपों के जाल में नहीं फँसते।

ईश्वर पुत्रता पर गहरी सोच की ओर आमंत्रण:
यीशु के उत्तर अक्सर उनके स्वभाव की गहरी सच्चाई की ओर संकेत करते हैं। लूका 22:70 में, जब उनसे पूछा गया कि क्या वह परमेश्वर के पुत्र हैं, उन्होंने कहा: “तुम कहते हो कि मैं हूँ।” उन्होंने उस समय स्पष्ट रूप से घोषणा नहीं की, परन्तु नकार भी नहीं किया।

व्यक्तिगत विश्वास के लिए आमंत्रण:
अंततः, यह वाक्यांश व्यक्ति को स्वयं उनके परिचय की पहचान करने का अवसर देता है। मत्ती 16:13-16 में, जब यीशु अपने शिष्यों से पूछते हैं: “तुम लोग कहते हो कि मैं कौन हूँ?”, तो वे व्यक्तिगत विश्वास का सामना करने के लिए उन्हें आमंत्रित करते हैं।

हमारे उत्तरों में बुद्धिमत्ता की भूमिका

यीशु का दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि हम अपने उत्तरों में सोच-समझकर और बुद्धिमानी से बोलें। जब हम विरोध या झूठे आरोपों का सामना करें, तो हर समय तुरन्त जवाब देने की आवश्यकता नहीं है।

यीशु ने “तुम कहते हो” इस वाक्यांश का उपयोग क्यों किया?
(मत्ती 27:11)

उदाहरण के लिए, यदि आप पादरी हैं और कोई झूठा आरोप लगाता है। तुरंत बचाव करने की जगह, यीशु की तरह बुद्धिमानी से उत्तर दें, कुछ बात स्वीकार करें और बाकी को परमेश्वर पर छोड़ दें।

“तुम कहते हो” – अर्थात “हाँ, तुमने ऐसा कहा।”

यह वार्ता को प्रश्नकर्ता के दृष्टिकोण पर केंद्रित रखता है, बजाय अनंत बहस के। जैसे यीशु करते थे, हमें भी कभी-कभी ऐसा उत्तर देना चाहिए कि दूसरों को अपने हृदय और उद्देश्यों का परीक्षण करना पड़े (मत्ती 7:3-5)।

निष्कर्ष

यीशु द्वारा “तुम कहते हो” का प्रयोग उनके गहन समझ और मिशन को दर्शाता है। उन्होंने सत्य को केवल शब्दों में नहीं, बल्कि अपने उत्तरों में भी व्यक्त किया। इस वाक्यांश से उन्होंने दूसरों को स्वयं सत्य की खोज करने का अवसर दिया। यह हमें भी सिखाता है कि बुद्धिमानी से उत्तर दें, अनुग्रह के साथ प्रतिक्रिया करें और निर्णय परमेश्वर पर छोड़ें।

प्रभु आपका भला करे।

यीशु ने “तुम कहते हो” इस वाक्यांश का उपयोग क्यों किया? (मत्ती 27:11)

इस संदेश को दूसरों के साथ साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp